ISSN 2454-2725
Peer Reviewed Journal

अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका

# जनकृति

संपादक: डॉ. कुमार गौरव मिश्रा

जनकृति
120-122 (सयुंक्त अंक)
अप्रैल-जून 2025
www.jankriti.com
IPI Value (2.65)

Photo by Josema

# जनकृति

**अंतरानुशासनिक पूर्व- समीक्षित द्विभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका**

**वर्ष 10, अंक 120-122** **अप्रैल-जून 2025**



**परामर्श मंडल**

डॉ. सुधा ओम ढींगरा, प्रो. करुणाशंकर उपाध्याय, प्रो. रमा, डॉ. हरीश नवल, प्रो. हरीश अरोड़ा, डॉ. प्रेम जन्मेजय, डॉ. कैलाश कुमार मिश्रा, प्रो. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, प्रो. कपिल कुमार, प्रो. जितेंद्र श्रीवास्तव प्रो. रत्नेश विश्वक्सेन

**संपादक**

डॉ. कुमार गौरव मिश्रा<br>
(सहायक प्रोफ़ेसर, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, बिहार)

**सहायक संपादक**

प्रो. पुनीत बिसारिया<br>
(प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश)

**संपादन मण्डल/विशेषज्ञ समिति**

डॉ. सदानन्द काशीनाथ भोसले (प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ , महाराष्ट्र)<br>
डॉ. दीपेन्द्र सिंह जाड़ेजा (प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, महाराजा सयाजीराव बड़ौदा विश्वविद्यालय, वड़ोदरा)<br>
डॉ. नाम देव (प्रोफ़ेसर, किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय)<br>
डॉ. प्रज्ञा (प्रोफ़ेसर, किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय)<br>
डॉ. रचना सिंह (एसोसिएट प्रोफ़ेसर, हिन्दू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय)<br>
डॉ. रूपा सिंह (एसोसिएट प्रोफ़ेसर, बाबु शोभा राम गोवेरमेंट आर्ट कॉलेज, राजस्थान)<br>
डॉ. पल्लवी (सहायक प्रोफ़ेसर, तेजपूर विश्वविद्यालय, असम)<br>
डॉ. मोहसिन खान (प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, जेएसएम कॉलेज, रायगढ़, महाराष्ट्र)<br>
डॉ. अखिलेश कुमार शर्मा (सहायक प्रोफ़ेसर, मिजोरम विश्वविद्यालय, मिजोरम)<br>
डॉ. प्रवीण कुमार (सहायक प्रोफ़ेसर, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश)<br>
डॉ. मुन्ना कुमार पाण्डेय (एसोसिएट प्रोफ़ेसर, सत्यवती कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय)<br>
डॉ. चंद्रेश कुमार छतलानी (सहायक प्रोफ़ेसर, जेआरएन राजस्थान विद्यापीठ, राजस्थान)<br>
डॉ. अंबिकेश त्रिपाठी (सहायक प्रोफ़ेसर, गांधी एवं शांति विभाग, महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय)<br>
डॉ. ज्ञान प्रकाश (सहायक प्रोफ़ेसर, बिहार)

**संपादन सहयोग**

डॉ. चन्दन कुमार (दिल्ली)<br>
डॉ. राकेश कुमार (दिल्ली)

**संस्थापक सदस्य**

कविता सिंह चौहान (मुंबई)<br>
डॉ. जैनेन्द्र कुमार (बिहार)

**अंतरराष्ट्रीय सदस्य**

प्रो. अरुण प्रकाश मिश्रा (स्लोवेनिया), डॉ. इंदु चंद्रा (फ़िजी), डॉ. सोनिया तनेजा (स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी), डॉ. अनिता कपूर (अमेरिका), राकेश माथुर (लंदन), रिद्मा (श्री लंका), मीना चोपड़ा (कैनेडा), पूजा अनिल (स्पेन)

जनकृति अव्यवसायिक
अप्रैल- जून 2025 अंक 120-122, वर्ष 10

**सहयोग राशि** : 60 रुपये ( वर्तमान अंक )
150 रुपये ( संस्थागत)

**व्यक्तिगत सदस्यता** : 800 रुपये (वार्षिक)
3000 रुपये (पंचवर्षीय)
5000 रुपये (आजीवन)

**संस्थागत सदस्यता** : 1200 रुपये (वार्षिक)
6000 रुपये (पंचवर्षीय)
10000 रुपये (आजीवन)

**(डिजिटल प्रति सदस्यता)**

**बैंक खाता विवरण** : Account holder's name- Kumar Gaurav Mishra
Bank name - Punjab National Bank
Account type – saving account
Account no. 7277000400001574
IFSC code- PUNB0727700

**पत्र व्यवहार** : फ्लैट- 401, वृंदावन अपार्टमेंट
फजलगंज, मंगलम होटल, ओल्ड जीटी रोड़, सासाराम, रोहतास, बिहार
पिन कोड: 821115, संपर्क- +918805408656

**नोट** : प्रकाशित रचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है।
सम्पादन पूर्णतः अवैतनिक है।

**ध्यानार्थ** : अकादमिक क्षेत्र में शोध की गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप जनकृति में शोध आलेख प्रकाशित किए जाते हैं। शोध आलेखों का चयन विभिन्न क्षेत्रों के विषय विशेषज्ञों द्वारा किया जाता है, जो विषय की नवीनता, मौलिकता, तथ्य इत्यादि के आधार पर चयन करते हैं। इसके अतिरिक्त पत्रिका में साहित्यिक रचनाएँ, वैचारिक लेख, साक्षात्कार एवं पुस्तक समीक्षा भी प्रकाशित होती है। जनकृति के माध्यम से हम सृजनात्मक, वैचारिक वातावरण के निर्माण हेतु प्रतिबद्ध है।

JANKRITI
Interdisciplinary Peer-Reviewed Bilingual International Monthly Magazine
Editor: Dr. Kumar Gaurav Mishra
Language: Bilingual (Hindi & English)
Publisher: JANKRITI
ISSN: 2454-2725

# संपादकीय

आप सभी पाठकों के समक्ष जनकृति का अप्रैल-जून 2025 सयुंक्त अंक प्रस्तुत है। इस अंक में विविध विषयों जैसे कला, सिनेमा, दलित-आदिवासी जीवन, स्त्री-विमर्श, ट्रांसजेंडर मुद्दे, मीडिया, शिक्षा, राजनीति, इतिहास और समसामयिक चिंतन पर आधारित लेख शामिल हैं इसके साथ ही साहित्यिक रचनाएँ, अनुवाद और पुस्तक समीक्षाएँ भी इस अंक का हिस्सा है। अंक में प्रकाशित प्रत्येक लेख अपने-अपने क्षेत्र में गहन शोध और विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

जनकृति एक बहु-विषयक अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका है। यह पूर्ण रूप से विमर्श केन्द्रित पत्रिका है, जहां आप विभिन्न अनुशासन के नवीन विषयों को एकसाथ पढ़ सकते हैं। पत्रिका में एक ओर जहां साहित्य की विविध विधाओं में रचनाएँ प्रकाशित की जाती है वहीं नवीन विषयों पर लेख, शोध आलेख प्रकाशित किए जाते हैं। अकादमिक क्षेत्र में शोध की गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनूरूप शोध आलेख प्रकाशित किए जाते हैं। शोध आलेखों का चयन विभिन्न क्षेत्रों के विषय विशेषज्ञों द्वारा किया जाता है, जो विषय की नवीनता, मौलिकता, तथ्य इत्यादि के आधार पर चयन करते हैं। जनकृति के माध्यम से हम सृजनात्मक, वैचारिक वातावरण के निर्माण हेतु प्रतिबद्ध है।

**डॉ. कुमार गौरव मिश्रा**

**जनकृति**

**अंतरानुशासनिक पूर्व- समीक्षित द्विभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका**

**वर्ष 10, अंक 120-122 अप्रैल-जून 2025 (सयुंक्त अंक)**

## अनुक्रम

**संपादकीय4**

**कला-विमर्श**

समानांतर हिन्दी सिनेमा और साहित्य / डॉ. आलोक कुमार पाण्डेय 9

'विजयदान देथा की कहानी 'दुविधा' एवं कहानी पर बनी फिल्मों का अध्ययन' (विशेष संदर्भ 'दुविधा' और 'पहेली' फिल्म) / हरिओम सुमन 18

राजनीतिक हिन्दी सिनेमा का सामाजिक चेतना और व्यवहार पर प्रभाव: उत्तर भारत में 2014–2024 की प्रवृत्तियों का अध्ययन / गौरव शुक्ल, डॉ. राहुल जोशी 31

दि गोट लाइफ : सपनों के टूटने और जीवन को बचाने की जद्दोजहद / निरंजन कुमार यादव 58

भक्ति आंदोलन में लोकनृत्य, गीत और संगीत की परम्परा / नीलम लालमन यादव 68

यथार्थवादी रंगमंच की दृष्टि से 'आषाढ का एक दिन' का मूल्यांकन / रेनू 79

मौखिक परंपरा के विविध लोकगीतों में स्त्रीपक्ष की उपस्थिति एवं पारिवारिक जीवन-संदर्भ / विमलकुमार बाबुसिंगभाई चौधरी 85

छायाचित्र के द्वारा सामाजिक बदलाव संदर्भ : सुधारक ओलवे / राजदीप राठौर 95

**दलित एवं आदिवासी -विमर्श**

श्यौराज सिंह 'बेचैन' की दलित कहानियाँ में चित्रित सामाजिक संघर्ष के विविध पक्ष/ डॉ. राज कुमार 111

फादर पीटर पौल एक्का कृत "मौन घाटी" उपन्यास में आदिवासी जीवन का सामाजिक-सांस्कृतिक यथार्थ और प्रतिरोध का स्वर / डॉ० अनुपम भारती 121

आदिवासी जीवन, दर्शन और आजीविका में भूमि और वनों की केंद्रीयत / समीक्षा सिंह 132

**स्त्री-विमर्श**

राष्ट्रीय आन्दोलन के परिप्रेक्ष्य में गाँधी जी का स्त्रीवादी पक्ष / डॉ. मधु 144

इतिहास की परतों में छुपी स्त्री, संस्कृति और सभ्यता का पुनर्पाठ: राखीगढ़ी - भारत की स्त्री-केंद्रित सभ्यता की झलक / प्रियंका 152

दलित स्त्री जीवन का दस्तावेज़ जोहड़ी / प्रियंका 161

भाषिक अस्मिता का प्रश्न और स्त्री की स्थिति / डॉ. गुड़िया बानो 170

Akka Mahadevi and her relevance in today's world / Kalyani singh 180

मीरा की भक्ति और स्त्री अधिकारों का सांस्कृतिक प्रतिरोध / डॉ. आशा मीणा 195

**किन्नर-विमर्श**

कथा साहित्य में चित्रित किन्नर समाज का भाषाई वैशिष्ट्य / डॉ. सुमन राजभर 207

हिन्दी साहित्य में किन्नर विमर्शः अस्मिता, संघर्ष और स्वीकार्यता / पवन कुमार 219

**मीडिया-विमर्श**

Henri Cartier-Bresson and Surrealism: An Artistic Influence on Photojournalism / Abhishek Singh 228

मीडिया संस्थानों का बाज़ारवादी चरित्र और पत्रकार : (विशेष संदर्भ वाया मीडिया) / जैनुल आबेदीन 240

हिंदी पत्रकारिता के 200 वर्ष: अभिव्यक्ति, संघर्ष और उत्कर्ष की अविरल यात्रा / डॉ. शैलेश शुक्ला 252

नवजागरणकालीन हिंदी भाषा-लिपि का प्रश्न और हरिश्चन्द्र-मैगजीन / ज्ञानेंद्र प्रताप सिंह 266

भारतीय राष्ट्रीय सुरक्षा का बदलता स्वरूप: सोशल मीडिया और उसका प्रभाव / डॉ. हितेश कुमार मीणा, आदित्या कुमार सिंह 280

मीडिया ट्रायल के प्रभाव का न्याय पालिका और जन मानसिकता पर प्रभाव से आरोपी के मौलिक अधिकारों के हनन का अध्ययन / दीपंकर राय, डा. धीरेंद्र पाठक 294

सोशल मीडिया के विविध संदर्भ / डॉ. मीनाक्षी रानी 304

**बाल-विमर्श**

Alternative Care for Children: Institutional Care vs Family-based Care/ Dr. Dinesh Kumar Gupta 310

**भाषिक-विमर्श**

दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों और हिन्दी के संरक्षक-भवानी दयाल संन्यासी/ डॉ. दीप्ति अग्रवाल 325

हिंदी भाषा के प्रचार में स्वामी दयानंद सरस्वती का योगदान / प्रतिभा 343

**शिक्षा-विमर्श**

सत्यम शिवम सुंदरम की साधना और भारतीय ज्ञान परंपरा / डॉ. निशि राघव 353

स्वामी विवेकानंद के विचार और समकालीन भारतीय शिक्षा प्रणाली / डॉ. आशीष कुमार ‘दीपांकर’ 364

**राजनीतिक -विमर्श**

झारखण्ड राज्य की मांग और सामाजिक आंदोलन की भूमिका / राजीव कुमार महतो, डॉ॰ शुचि संतोष बरवार 374

The Relationship between the Executive and Public Administration in India / Anuradha 391

**इतिहास**

महात्मा गाँधी के सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह के अनुप्रयोग : भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन 1917-1947 के संदर्भ में / रवि कुमार 407

**समसामयिक-विमर्श**

Addressing Challenges in the Agricultural Sector: An Integrative Approach/ Madhavi Moni K, Ashutosh Yadav, Shailu Singh, Anurag Kakkar 418

A Study on Advantages of Intellectual Property Rights for Creative Minds / Mr. Mige Kambu, Dr. Shripraksh Pal 429

भारतीय ज्योतिष के माध्यम से रोग निदाल और निवारण / डॉ. चंद्रेश कुमार छतलानी 438

**साहित्यिक-विमर्श**

हिंदी साहित्य और 21वीं सदी में पुरुष विमर्श की प्रासंगिकता / डॉ. गोविंद कुमार धारीवाल 457

हिंदी उपन्यास लेखन परम्परा और किसान जीवन / रघुवीर दान चारण, डॉ. अखिलेश कुमार शर्मा 465

डॉ.सूर्यबाला का व्यंग्य संसार / अनिकेत गौतम 478

सूरदास के काव्य में स्त्री और प्रेमसाधना / डॉ. वैशाली पाचुन्दे 493

विस्थापन और अस्मिता की तलाश : उषा प्रियंवदा की प्रवासी स्त्रियों का समाज-मनोवैज्ञानिक अध्ययन / सलमान, आचार्य पी. राजरत्नम 503

मुक्तिबोध की कविता ‘अंधेरे में’ का अंधेरा / निर्मल कुमार, शनि पाण्डेय 514

भारतीय नवजागरण एवं पुनर्जागरण में परस्पर अंतर्संबंध (हिंदी साहित्य के विशेष संदर्भ में) / डॉ. शिवानी पंवार 527

प्रभाकर माचवे की कविताओं में प्रेम, सौंदर्य और प्रकृति चित्रण / राजीव यादव 539

फादर पीटर पौल एक्का कृत “मौन घाटी” उपन्यास में आदिवासी जीवन का सामाजिक-सांस्कृतिक यथार्थ और प्रतिरोध का स्वर / डॉ० अनुपम भारती 555

बसने, उजड़ने और उचटने की त्रासद झेलते कश्मीर में धर्म के विकास का इतिहास / प्रियंका प्रियदर्शिनी 566

अज्ञेय के साहित्य में अध्यात्म : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन / मुकुंद शर्मा 578

थॉमस हार्डी के आँचलिक उपन्यासों में चित्रित सांस्कृतिक वातावरण / डॉ. राखी बालगोपाल 590

मनु शर्मा कृत 'कृष्ण की आत्मकथा' उपन्यास में आधुनिकता के स्वर / पवन कुमार 609

पंडित लखमीचंद के सांगों में ज्ञान तत्व मीमांसा / डॉ॰ हरीन्द्र कुमार 619

मनु शर्मा के पौराणिक उपन्यासों में कुंती और गांधारी के मातृत्व की भूमिका / ललिता कश्यप, डॉ. सरल अवस्थी 631

कश्मीर केंद्रित हिन्दी उपन्यास 'दर्दपुर' में अभिव्यक्त स्त्री जीवन / मीनाक्षी गिरि 639

राजस्थान की चारण साहित्य-परम्परा में सांस्कृतिक चेतना / भवानी शंकर कुमावत 648

वैश्वीकरण के परिपेक्ष्य में ‘पहाड़चोर’ उपन्यास / कोमल 657

‘पचपन खंभे लाल दीवारें’ में स्त्री जीवन की समस्या/ नन्दनी कुमारी 666

**अनुवाद**

मशीनीनुवाद और हिंदी का वैश्विक परिदृश्य / शालू, डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति 674

**आलेख**

आचार्य करुणाशंकर उपाध्याय की आलोचना – दृष्टि / प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी 685

मध्य प्रदेश के साहित्यिक परिदृश्य में डॉक्टर विकास दवे की भूमिका / डॉ. वर्षा महेश 'गरिमा' 709

संस्कारों के संस्पर्श में आधुनिकता का विस्तार है। / डॉ. अनुपमा तिवारी 715

**पुस्तक समीक्षा**

मुंबई नाइट्स : मायानगरी के अंधेरे कोनों से निकली एक तीखी सच्चाई। / यशपाल निर्मल 726

काठ के पुतले(कहानी संग्रह) – प्रज्ञा / डॉ. सदानन्द 729

एक दिन बहुत तड़पायेगी 'गाडा टोला' की याद / डॉ.मधुलिका बेन पटेल 737

हाशिये को आवाज़ देने वाला विश्वविद्यालय : एक कुलपति की नजर से / डॉ. गुंजन सिंह 748

**साहित्यिक रचनाएँ**

**साहित्यिक रचनाएँ: कविता**

गंगाधर चाटे, बृज गोयल, योगेंद्र पांडेय 755

**साहित्यिक रचनाएँ: कहानी**

अनूदित लातिन अमेरिकी कहानी: मौंतिएल की विधवा मूल लेखक: गैब्रिएल गार्सिया मार्खेज़, अनुवाद: सुशांत सुप्रिय 768

अपनें / डॉ.गौस शेख 778

**साहित्यिक रचनाएँ: लघुकथा**

हवन / डॉ. महिमा श्रीवास्तव 789

**साहित्यिक रचनाएँ: व्यंग्य**

काश मैं सिविल विभाग का प्रमुख होता / डॉ. शैलेश शुक्ला 791

**साक्षात्कार**

विभा रानी के साथ सिमरन कुमारी की बातचीत 797

# समानांतर हिन्दी सिनेमा और साहित्य

**डॉ. आलोक कुमार पाण्डेय**
प्रवक्ता, माखन लाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय, रीवा परिसर

**सारांश**
*भारत में सिनेमा ने अब तक 110 वर्ष की यात्रा पूरी की है जबकि उसकी तुलना में साहित्य का इतिहास ज्यादा विशद है। फिर भी अलग अलग दौर में विकसित हुई इन दोनों विधाओं का उद्देश्य एक ही है, यह कि दोनों ही विधाएं भाव का चित्रण करती हैं। साहित्य और सिनेमा दोनों ही हमारी संस्कृति, सोच और स्वप्न का बोध हमसे कराती हैं। इस तरह साहित्य और सिनेमा कहीं न कहीं एक दूसरे के पूरक हैं। यह अंतर्संबंध फिल्मों के लिए कहानी के चयन में स्पष्ट दिखता है। जब हम पाते हैं कि शुरुआत से ही भारतीय सिनेमा ने साहित्य से उपजी कहानियों,नाटक, उपन्यास,नृत्य और गीत को अपना विषय बनाया। यह चयन भाषाओं और क्षेत्र से परे हर दशक और कलेवर की फिल्मों में दिखता है।*

**बीज शब्द:** *सिनेमा, साहित्य, समाज, समानांतर, विधा, विकास*

## शोध आलेख

भारत में सिनेमा ने अब तक 110 वर्ष की यात्रा पूरी की है जबकि उसकी तुलना में साहित्य का इतिहास ज्यादा विशद है। फिर भी अलग अलग दौर में विकसित हुई इन दोनों विधाओं का उद्देश्य एक ही है, यह कि दोनों ही विधाएं भाव का चित्रण करती हैं। साहित्य और सिनेमा दोनों ही हमारी संस्कृति, सोच और स्वप्न का बोध हमसे कराती हैं। इस तरह साहित्य और सिनेमा कहीं न कहीं एक दूसरे के पूरक हैं। यह अंतर्संबंध फिल्मों के लिए कहानी के चयन में स्पष्ट दिखता है। जब हम पाते हैं कि शुरुआत से ही भारतीय सिनेमा ने साहित्य से उपजी कहानियों,नाटक, उपन्यास,नृत्य और गीत को अपना विषय बनाया। यह चयन भाषाओं और क्षेत्र से परे हर दशक और कलेवर की फिल्मों में दिखता है।

साहित्यिक अनुकृति और सिनेमा निर्माण का यह संबंध भारत की पहली फिल्म राजा हरिश्चंद्र से ही शुरु होता है। "राजा हरिश्चंद्र फिल्म की कहानी इसी नाम के एक नाटक पर आधारित थी। शु रुआती दौर की अधिकांश फिल्मों का विषय पौराणिक था और ज्यादातर फिल्में उन विषयों पर लिखे गए जो किसी सांस्कृतिक ग्रंथ या नाटक पर

आधारित थी। इन फिल्मों में भक्त प्रहलाद,शिव महिमा,विष्णु अवतार,कालिया मर्दन,संत नामदेव,संत तुकाराम का नाम लिया जा सकता है। स्वतंत्रता संघर्ष के दौर में विशेषकर सवाक फिल्मों की शुरूआत के बाद ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की फिल्में जैसे अमर सिंह राठौड़,सिकंदर,पृथ्वी राज,झांसी की रानी,आलामारा,अनारकली,बाज बहादुर बनी। इन सभी फिल्मों का आधार भी साहित्यिक ही था जो किसी कहानी,नाटक उपन्यास या खंड काव्य से उपजा था। प्रेम आधारित जो फिल्मों बनी थी वो भी साहित्य या लोकोक्ति से ही पोषित थी। ऐसी फिल्मों में अनारकली, शीरी फरहाद, लैला मजनू और देवदास का नाम लिया जा सकता है"। 1

"आधुनिक साहित्य पर फिल्मे बनाने का दौर 1933 से शुरू हुआ जब निर्माता निर्देशक मोहन भावनानी के लिए मुंशी प्रेमचंद ने मिल मजदूर नामक कहानी लिखी। कथा वस्तु के कारण फिल्म पर अंग्रेज सरकार के द्वारा खूब कांट छांट की गई। बाद में यह फिल्म पंजाब में गरीब मजदूर नाम से रिलीज की गई। इसके अगले वर्ष 1934 में प्रेमचंद के ही कृतियों पर नवजीवन और सेवासदन फिल्में बनी। 1941 में ए.आर.कारदार ने मुंशी प्रेमचंद की कहानी त्रिया चरित्र पर स्वामी नाम से फिल्म का निर्माण किया। 1946 में प्रेमचंद्र के उपन्यास रंग भूमि पर इसी नाम से फिल्म बनी"। 2

भगवती चरण वर्मा के उपन्यास पर चित्रलेखा,फणीश्वर नाथ रेणु की कहानी 'मारे गए गुलफाम' पर तीसरी कसम,चंद्र धर शर्मा गुलेरी की कहानी उसने कहा था पर इसी नाम से फिल्म ,आचार्य चतुर सेन शास्त्री के उपन्यास पर बनी धर्मपुत्र,राजेंद्र सिंह बेदी के उपन्यास एक चादर मैली सी पर बनी फिल्म,कमलेश्वर के साहित्य पर आंधी और मौसम, साहित्य आधारित फिल्मों की बानगी भर ही हैं। बंगला साहित्यकारों में गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर, शरत चंद्र, विमल मित्र और बंकिम चंद्र की रचनाओं पर ढेर सारी फिल्मों का निर्माण हुआ। हम यह भी देखते हैं कि फिल्मों के लिए कहानियों के चुनने में सिर्फ हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्यकारों को ही केंद्र में नही रखा गया बल्कि विदेशी साहित्यकारों की कृतियों को भी खूब स्थान मिला। "विशाल